

## कृषि उत्पादन में वृद्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. कल्याणी

सहा.प्राध्यापक

(अर्थशास्त्र), दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय, मंचादुर, दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. संगीता मैहरिया

सहा.प्राध्यापक

विभागाध्यक्ष – वाणिज्य विभाग, दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय, मंचादुर, दुर्ग (छ.ग.)

कृषि समस्त उद्योगों की जननी है मानव जीवन की पोषक प्रगति का सूचक तथा समानता की प्रतीक समझी जाती है तीव्र आर्थिक विकास की ओर अग्रसर विश्व के समस्त विकसित एवं विकासशील देश अपने उपलब्ध संसाधनों का अपनी परिस्थितियों एवं क्षमताओं के अनुरूप यथा संभव अनुकूलतम उपयोग कर कृषि विकास हेतु अग्रसर है भारत कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला देश होने के कारण कृषि राष्ट्रीय आय का प्रमुख स्रोत है जीविकोपार्जन का साधन है एवं औद्योगिक विकास वाणिज्य एवं व्यापार का आधार है कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है महात्मा गांधी ने कहा था भारत का विकास करना है तो कृषि व गाँवों का विकास करना होगा।

भारत एक जनाधिक्य वाला देश है एवं लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारित है अतः भारत के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि कृषि विकास पर समुचित ध्यान दिया जाये। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से योजनाबद्ध विकास किया गया हरित क्रांति के माध्यम वैज्ञानिक कृषि बहुफसलीय कार्यक्रम उन्नत बीजों का प्रयोग सिंचाई के साधनों का विस्तार कीटनाशकों का प्रयोग एवं कृषि हेतु किसानों को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराकर कृषि को मजबूती प्रदान किया गया है फसल बीमा योजना का लाभ किसानों की मुहैया कराया गया एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित लघु व मध्यम आकार के उद्योगों का विस्तार किया गया स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेकों योजनाओं के माध्यम से कृषि विकास का कार्य किया गया भारत जैसे विशाल जनाधिक्य वाले देश में खाद्यान्न की पूर्ति के लिए कृषि क्षेत्र का समृद्ध होना आवश्यक है।

### अध्ययन क्षेत्र का परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य की लगभग 80% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है एवं मुख्यतः कृषि व लघु उद्योगों पर निर्भर है राज्य में बोयी जाने वाली फसलों में धान, मक्का, गेहूँ, कोदो, कुटकी, मोटे अनाज, दलहन एवं तिलहन प्रमुख हैं धान की उत्पादन की अधिकता के कारण छत्तीसगढ़ को 'धान को कटोरा' कहा जाता है इसके अतिरिक्त अन्य फसलों में मूंगफली, सोयाबीन व्यापारिक फसलों में गन्ना, तम्बाकू का उत्पादन प्रमुखता से किया जाता है इसके अतिरिक्त सब्जियों, फलों एवं मसालों का उत्पादन भी छत्तीसगढ़ में किया जाता है।

छत्तीसगढ़ में 80% लघु एवं सीमांत कृषक हैं। लघु व सीमांत कृषकों की कृषि उपज भंडारण तथा मोलभाव की क्षमता नहीं होने से बाजार के उतार चढ़ाव तथा भुगतान के जोखिम को देखते हुए उनको गुणवत्ता के आधार पर सही कीमत सही तौल व समय पर भुगतान करने हेतु डीमड मंडी एवं इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग की स्थापना की गई।

मुख्य बिन्दु:-

1. देश में सबसे ज्यादा 2500 रु प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की गई।
2. राजीव गांधी न्याय योजना के तहत धान मक्का तथा गन्ना के लिए 19 लाख किसानों को 5700 करोड़ रु का भुगतान 4 किस्तों में करने के लिए 21 मई 2020 से प्रारम्भ किया गया।
3. देशव्यापी लाकडाउन के बावजूद छ.ग. के कृषि क्षेत्र में आर्थिक तेजी रही जिसे रिजर्व बैंक ने सहारा।
4. लाखों की खेती के लिए किसानों को अब सहकारी समितियों से अन्य फसलों की तरह अल्पकालीन ऋण मिलेगा।

5. कृषक जीवन ज्योति योजना के तहत 5 हार्स पावर तक की कृषि पम्पों की निः शुल्क विद्युत प्रदाय के लिए 2 हजार 300 करोड का प्रावधान है ।
6. गोधन न्याय योजना के तहत गौठानों से गोबर की खरीदी की जा रही है यह देश दुनिया की अनुठी योजना है जिससे किसानों को ग्रामीण व पशुपालकों को सीधे आर्थिक के साथ अन्य लाभ होंगे ।
7. राज्य शासन द्वारा विकास योजनाओं के लिए किसानों की भूमि के अधिग्रहण पर मुआवजा राशि दो गुना से बढ़ाकर चार गुना कर दी गई ।
8. राज्य शासन द्वारा 17 दिसम्बर 2018 से प्रदेश के कृषकों का अल्पकालीन कृषि ऋण माफ करने का निर्णय लिया जिसके तहत सहकारी बैंकों और छत्तीसगढ ग्रामीण बैंक में सभी किसानों के 30 नवम्बर 2018 तक के सभी ऋण माफ किए गए ।
9. कृषकों को सहकारी समितियों बैंकों के माध्यम से 1 अप्रैल 2024 से ब्याज मुक्त अल्पकालीन कृषि ऋण उपलब्ध कराया गया है 27 जुलाई 2020 तक 5200 करोड लक्ष्य के विरुद्ध 10 लाख 83 हजार किसानो को 3743 करोड रुपये का ऋण विपरित किया गया ।
10. प्रदेश में कृषि यंत्रिकरण के विस्तार हेतु निजी क्षेत्र के इच्छुक कृषि उद्यमियों स्वसहायता समूहो अशासकीय संस्थाओं द्वारा कृषियंत्र सेवा केन्द्र की स्थापना कर ट्रैक्टर तथा कृषि मशीनरी कृषकों को किराए पर उपलब्ध कराये जाते है। योजना प्रारभ होने से अब तक कुल 2266 कृषि यंत्र सेवा केन्द्र की स्थापना की जा चुकी है ।
11. प्राकृतिक आपदा जैसे भूकम्प, बाँढ व अन्य प्रकोप से प्रभावित किसानों को फसल बीमा योजना के अंतर्गत क्षतिपूर्ति दावा भुगतान हेतु सरकार अनवरत प्रयासरत है ।
12. कम सिंचाई संसाधन वाले क्षेत्रो में जल संरक्षण एवं संवर्धन के विभिन्न कार्य जैसे चैकडेम परवोलेशन टैक फार्म पौड, डबरी, कुआ एवं अन्य संरचनाओं का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है

#### उद्देश्य:-

1. कृषको के आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना ।
2. कृषि उपकरणों एवं साधनो के प्रयोग से कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई ।
3. कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए किए गये सरकारी प्रयासो की समीक्षा करना ।
4. कृषि ऋण उपलब्धता की स्थिति का पता लगाना ।
5. कृषक किस प्रकार की सुविधाओं की अपेक्षा करते है इसकी जानकारी प्राप्त करना ।
6. किसानों की समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।

#### परिकल्पना

1. सरकार द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासो से कृषि उत्पादकता मे बढ़ोतरी हुई ।
2. कृषि उत्पादन बढ़ने से उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ है ।

#### अध्ययन क्षेत्र का विवरण

खरीफ एवं रबी फसलो के अंतर्गत सकल क्षेत्र

वर्ष	खरीफ			रबी			महायोग		
	खाद्य फसले	अखाद्य फसले	योग	खाद्य फसले	अखाद्य फसले	योग	खाद्य फसले	अखाद्य फसले	योग
2018-19	143997	414	144411	44652	51	188649	188649	465	189114
2019-20	144365	755	145120	61904	90	206269	206269	845	207114
2020-21	142959	4725	147684	59922	2558	202881	202881	7283	210164

2021-22	149517	2336	151853	52291	4009	201808	201808	6345	208153
2022-23	146026	1883	147909	56155	0	194181	194181	1883	169065
योग	126864	10113	736977	274924	6708	281632	993788	16812	983610
औसत	145372.8	2022.6	147395.4	54984.8	1341.6	56326.4	198757.6	3362.4	196.722

स्रोत:- सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पिछले पांच वर्षों में 2018-19 से 2022-23 तक खरीफ फसलो के अंतर्गत खाद्य फसले 145372.8 हेक्टेयर क्षेत्रफल में बोया गया। अखाद्य फसले 2022.6 हेक्टेयर में क्षेत्रफल बोया गया। इस तरह कुल 147395.45 हेक्टेयर क्षेत्रफल में खरीफ फसले बोयी गई। रबी फसलो के अंतर्गत 54984.8 हेक्टेयर क्षेत्रफल में खाद्य एवं 1341.6 हेक्टेयर में अखाद्य फसले। इस प्रकार इस तरह कुल 147395.45 हेक्टेयर क्षेत्रफल में रबी फसले बोयी गई।

### प्रमुख फसलो का प्रति हेक्टर उत्पादन (क्विंटल में)

वर्ष	धान चावल	गेहूँ	ज्वार	मक्का	कोदा कुटकी	चना	तुअर	उडद	लाख तिवडा	गन्ना	सोयाबीन	तिल	मूंगफली	राम तिल	राई सरसों
2018-19	7970	5163	1	10649	0	3630	2550	1857	1857	0	900	1350	1512	0	2721
2019-20	88.81	15.76	13.78	28.9	1.57	6.22	28.62	7.33	7.33	92.34	19.95	7.15	0	0	4.1
2020-21	104	27	13	27	8	23	27	11	11	96	19	6	10	0	15
2021-22	7560	3270	2670	3690	780	2580	3960	1290	1290	10950	2760	990	5670	840	1890
2022-23	137.34	35.78	0	121.5	35	22.43	33.6	19.65	19.65	2163	8.8	13.95	24	0	15.62
योग	15860.15	8511.54	2696.78	14516.4	82457	6261.65	6599.22	3184.98	3529.16	1330.134	3707.55	2367.1	7216	840	4645.712
औसत	3172.03	1702.308	539.35	2903.28	164.91	1252.33	6572.34	639.996	705.832	2660.26	741.58	473.42	1443.2	168	929.14

स्रोत:- सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पिछले 5 वर्षों में धान का प्रति हेक्टेयर उत्पादन औसतन 3172.03 क्विंटल है, गेहूँ का 1702.3 क्विंटल, ज्वार का 539.35 क्विंटल, मक्का का 2903.28 क्विंटल, 164.91 क्विंटल कोदा कुटकी, चना का 1252.33 क्विंटल, तुअर का 6572.34 क्विंटल, उडद का 639.99 क्विंटल, लाख तिवडा का 705.83 क्विंटल, गन्ना का 2660.26 क्विंटल, सोयाबीन का 741.55 क्विंटल, तिल का 473.42 क्विंटल, मूंगफली 1443.2 क्विंटल, रामतिल 168 क्विंटल एवं राई सरसो का 929.10 क्विंटल पिछले 5 वर्षों में औसत हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त हुआ है।

### आकारानुसार कृषि जोतो की संख्या

वर्ष	1 हेक्टेयर से कम		1-2 हेक्टेयर		2-4 हेक्टेयर		4- 10 हेक्टेयर		10 हेक्टेयर से अधिक		योग	
	संख्या	क्षेत्रफल	संख्या	क्षेत्रफल	संख्या	क्षेत्रफल	संख्या	क्षेत्रफल	संख्या	क्षेत्रफल	संख्या	क्षेत्रफल
2018-19	88612	39920.132	29618	41230.092	12926	34874.943	4538	67456.231	552	8262.998	136246	171944.396
2019-20	88612	39920.136	29618	41230.092	19926	34874.943	4538	25940.169	552	8263.010	136246	150228349

2020-21	88612	39919	29618	41228	12926	34874	4538	25938	552	8262	136246	150221
2021-22	88612	39920.14	29618	41230.09	12926	34874.93	4538	25940.17	552	8263.02	136246	150228.35
2022-23	88612	39920.14	29618	41230.09	12526	34872.93	4538	25940.17	552	8443.02	136246	150228.35

स्रोत:- सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका में कृषि तथा संबंध सेवाओं के विवरण प्रस्तुत किया गया है। पिछले पाँच वर्षों में देखा जाए तो कृषि जोतो की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

### उन्नत कृषि के अंतर्गत क्षेत्र

वर्ष	रासायनिक खाद						पौधा संरक्षण		उन्नत बीज		बीजोपचार	
	नाइट्रोजन		फास्फोरस		पोटास		क्षेत्रफल	मात्रा	क्षेत्रफल	मात्रा	क्षेत्रफल	मात्रा
	क्षेत्रफल	मात्रा	क्षेत्रफल	मात्रा	क्षेत्रफल	मात्रा						
2018-19	190460	16396	190460	8574	190460	4137	33883	45200	88280	39599	112600	385
2019-20	204070	20204	204070	10870	204070	5297	30200	40020	94066	43132	112750	390
2020-21	204263	21468	204263	12625	204263	5481	33885	45200	96143	52883	113200	395
2021-22	205609	19244	205609	11597	205609	5708	205609	43000	63243	44634	113900	398
2022-23	200564	20542	200564	11543	200564	4439	200546	46580	66506	46836	114100	473
औसत	200993.2	19570.8	200993.2	11042.6	200993.2	5012.4	100828.2	44000	68346.4	54136.6	113310	408.2

स्रोत:- सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पिछले 5 वर्षों में औसतन उन्नत कृषि के अंतर्गत रासायनिक खादों में नाइट्रोजन की 19570.8 मि. टन फास्फोरस की 11042.6 मि. टन एवं पोटाश की 5012.4 मि. टन का उपयोग किया गया पौधा संरक्षण 44000 टन उन्नत बीज 54136.6 मि. टन एवं 408.2 मि. टन बीजोपचार का उपयोग किया गया है।

### सिंचाई के साधन एवं सिंचित क्षेत्र

वर्ष	नहरे		नलकुप		कुए		तालाब		अन्य स्रोतों सिंचित क्षेत्र
	शासकीय निजी	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित	
2018-19	104	59089	13994	69260	916	342	141	440	3024
2019-20	27	62406	15785	79966	673	537	128	624	3145
2020-21	33	63422	19239	84446	935	204	128	694	2601
2021-22	104	62731	18105	43999	883	204	45	362	2363
2022-23	47	60156	18138	75992	1056	55	154	2264	2526
योग	315	307804	85261	353663	4463	1342	596	4384	13659
औसत	63	61560.8	17052.2	70732.6	892.6	268.4	119.2	876.8	2731.8

स्रोत:- सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पिछले 5 वर्षों में औसतन नहरों के माध्यम से 61560.8 हेक्टेयर क्षेत्र सिंचित है नलकूप के माध्यम से 70732.6 हेक्टेयर सिंचित है, कुएँ के माध्यम से 268.4 हेक्टेयर सिंचित है, तालाब से 876.8 हेक्टेयर सिंचित है एवं अन्य स्रोतों से 2731.8 हेक्टेयर सिंचित है।

### सर्वेक्षित कृषकों का व्यक्तिगत विवरण

आयु	20-30	30-40	40-50	50 से अधिक	योग
	(10)17.8%	(04) 7.14%	(14) 25%	(28)14.2%	56
जाति	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अ.ज.जाति	अ.जा	56
	(10) 17.8%	(30) 53.5%	(07) 12.5%	(09) 16.0%	
शिक्षा	प्राथमिक	माध्यम	उच्च माध्य	उच्च शिक्षित	56
	(10) 17.81%	(11) 19.6%	(25) 44.6%	(10) 17.8%	
मासिक आय	0-10000	10हजार-20हजार	20हजार-30	30हजार से अधिक	56
	(22) 39.2%	(11) 19.6%	(07) 12.5%	(18) 32.14%	
कृषि भूमि	1 हेक्टेयर से कम	1-2 हेक्टेयर	2-4 हेक्टेयर	4-10हेक्टेयर	56
	(36)64.2%	(11) 19.6%	(12) 21.4%	(08) 14.2%	

स्रोत:- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित कृषकों का व्यक्तिगत विवरण में 17.8% कृषक 20-30 आयु वर्ग के हैं, 7.14% कृषक 30-40 आयु वर्ग, 25% कृषक 40-50 आयु वर्ग एवं 14.2% कृषक 50 से अधिक वर्ग के हैं। व्यक्तिगत विवरण से स्पष्ट है कि 17.8% कृषक सामान्य जाति से, 53.5% अन्य पिछड़ा वर्ग से, 12.5% अनुसूचित जनजाति एवं 16% अनुसूचित जाति से हैं। शैक्षणिक स्तर के मामले में 17.8% प्राथमिक शिक्षा, 19.6% माध्यमिक शिक्षा, 44.6% उच्चतर माध्यमिक शिक्षा एवं 17.8% कृषक उच्च शिक्षा प्राप्त किये हैं। कृषकों की मासिक आय में 39.2% कृषक की आय 0-10000रु, 19.6% कृषक की आय 1000-20000रु, 12.5% कृषक की आय 20000-30000रु एवं 32.14% कृषक की मासिक आय 30000रु से अधिक है। कृषकों के कृषि भूमि में 64.2% कृषकों की कृषि भूमि 1 हेक्टेयर से कम है, 19.6% कृषकों के पास 1-2 हेक्टेयर कृषि भूमि, 21.4% कृषकों के पास 2-4 हेक्टेयर एवं 14.2% कृषकों के पास 4-10 हेक्टेयर कृषि भूमि है।

### उत्पादन में वृद्धि से आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है-

कृषक संख्या	हाँ	नहीं
56 (100%)	30( 53.5%)	26( 46.4%)

स्रोत:- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि होने से 53.5% कृषकों के आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है जबकि 46.4% के आर्थिक स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ है।

### उत्पादन बढ़ाने के लिए कौन सी तकनीक का प्रयोग किया जाता है-

कृषक संख्या	सिंचाई खाद रा. उर्वरक बीज दवाईयाँ टैक्टर हारवेस्टर सभी साधनों का	रा.सा.उर्वरक बीज टैक्टर
56(100%)	28(50%)	28(50%)

स्रोत:- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका से ज्ञात होता है कि उत्पादन बढ़ाने के लिए 50% कृषक सिंचाई खाद रासायनिक उर्वरक बीज कीटनाशक दवाईया टैक्टर एवं हारवेस्टर जैसे सभी साधनों का प्रयोग करते हैं। जबकि 50% केवल रासायनिक उर्वरक बीज एवं टैक्टर का प्रयोग करते हैं।

### कृषि ऋण में किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से क्या-क्या वस्तुएं प्राप्त होती हैं-

कृषक संख्या	सभी वस्तुएं रा. उर्वरक बीज दवाईया कैस नगद	नगद रा. उर्वरक
56 (100%)	24 (42.8%)	32 (57.14%)

स्रोत:- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका से स्पष्ट है कि कृषि ऋण में किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से 42.8% को रा. उर्वरक बीज कीटनाशक दवाईया एवं नगद राशि प्राप्त होते हैं जबकि 57.14% ने कहा कि केवल नगद एवं रासायनिक उर्वरक प्राप्त होते हैं।

### सर्वेक्षित कृषकों द्वारा ऋण पूर्व एवं ऋण पश्चात उत्पादन की स्थिति-

कृषक संख्या	ऋण पूर्व उत्पादन वृद्धि	ऋण के पश्चात उत्पादन में वृद्धि
56 (100%)	11 (19.6%)	45(80.3%)

स्रोत:- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका से स्पष्ट है कि ऋण प्राप्त नहीं होने पर केवल 19.6% उत्पादन में वृद्धि हुई है जबकि 80.3% किसानों के कहा कि ऋण प्राप्ति होने से कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है।

### निष्कर्ष-

उपरोक्त तालिकाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सर्वेक्षित कृषकों में ज्यादातर कृषक 40-50 आयु वर्ग के हैं। सर्वेक्षित कृषकों में ज्यादातर कृषक अन्य पिछड़ा वर्ग से हैं। ज्यादातर कृषकों ने उच्च माध्यमिक शिक्षा ग्रहण किये हैं। ज्यादातर कृषकों की मासिक आय केवल 0-10000रु ही है। अधिकांश 64.2 कृषकों के केवल उत्पादन से वृद्धि होने से 1 हेक्टेयर से कम कृषि भूमि है। आधे से अधिक कृषकों के आर्थिक स्तर में सुधार हुए हैं उत्पादन बढ़ाने के लिए 50 कृषकों ने सिंचाई साधन, खाद, रासायनिक उर्वरक, बीज, कीटनाशक दवाईया, टैक्टर एवं हारवेस्टर जैसे साधनों का उपयोग करते हैं। कृषकों को किसान क्रेडिट कार्ड में माध्यम से रासायनिक उर्वरक, बीज कीटनाशक दवाईया एवं नगदी प्राप्त होते हैं। सर्वेक्षित कृषकों को ऋण प्राप्त होने के पश्चात कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

### संदर्भग्रंथ

- 1- डॉ. सुनील कुमार शर्मा एवं सोहन पाटीदार (2010)- कृषकों के आर्थिक विकास पर संस्थागत वित्त पोषण का प्रभाव एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक धार के विशेष संदर्भ) में सामाजिक सहयोग पेज नं. 26-32, 2010
- 2- महेश चंद मीना(2019)- राजगढ़ तहसील में फसल उत्पादन का भौगोलिक अध्ययन, Journal of advances and scholarly researches in allied education vol-16, issue no 06, may 2019, ISSN No.2230-7540 page no. 2664 to 2669.
- 3- आशा यादव (2021) - भारत की कृषि नीति एवं विकास एक अध्ययन- शोध समागम ISSN 2581-6918 पेज नं. 1494-1498 March-2021
- 4- मुकेश कुमार स्वामी एवं डॉ सुरेन्द्र कुमार सैनी (2022) - कृषि आधुनिकीकरण का उत्पादकता पर प्रभाव International journal of maulitidisci plinary research in science engineering & technology volumns-5 issue 06, june 2022, page -1524-1530,ISSN- 2582-7219

- 5- मनोज कुमार और धमेन्द्र कुमार भारती (2022) – भारत में कृषि उत्पादकता वृद्धि एवं सुधार  
International journal of enhanced research in educational development, ISSN- 2320-8708,  
vol-10 issue-04, july august- 2022 page no. 126–137
- 6- गौसेवक प्रसाद एवं डॉ धमेन्द्र सिंह (2023) –छत्तीसगढ़ के फसल प्रतिरूप में हुए परिवर्तन का अध्ययन,  
शोध दिशा, पेज नं 84–88, अप्रैल–जून 2023
- 7- हिना फिरदौस एवं सीमा बडगइया(2024) – कृषि आधारित उद्योगों की समस्यायें एवं संभावनाओं का  
अध्ययन, उमरिया जिले के विशेष संदर्भ में, International journal of global science research, Page  
no. 2316-2320, Issn-2348-8344, March2024.
- 8- जिला सांख्यिकी पुस्तिका दुर्ग– 2022–23
- 9- [www.durg.gov.in](http://www.durg.gov.in)
- 10- Indian economy – Mishra & puri